परिवार में व्यवस्था

संबंध को समझना —विश्वास

Self-exploration, Self-investigation, Self-study

1. अध्ययन वस्तु :

a. चाहना – लक्ष्य – सुख, समृद्धि – निरंतर

b. करना लक्ष्य को हासिल करने के लिए कार्यक्रम

सुख = व्यवस्था / संगीत में जीना

↓

व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना:

1. मानव में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था

2. अध्ययन विधि

–जाँचना–स्वयं के अधिकार पर

Whatever is said is a **Proposal** (**Do not accept it to be true**)

Verify it on your own right

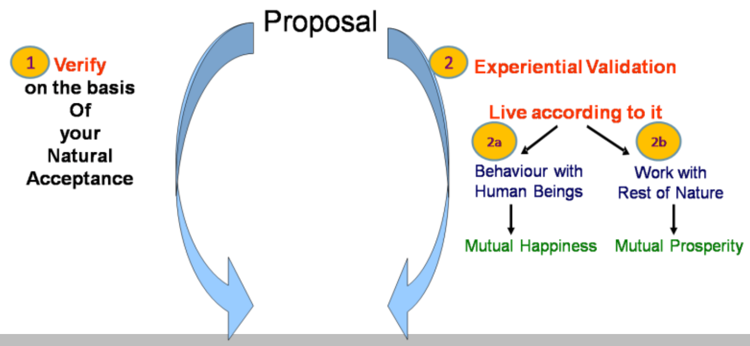

जो भी कहा जा रहा है–प्रस्ताव है मानें नहीं

जांचे–स्वयं के अधिकार पर

प्रस्ताव

अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर

जीकर देखें

व्यवहार कार्य

मानव के साथ शेष प्रकृति के साथ

उभय सुख उभय समृद्धि

परिवार में व्यवस्था

1. संबंध है– मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है– एक मैं का दूसरे मैं के प्रति
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है– निश्चित हैं 9
4. इन भावों के निर्वाह एवं मूल्यांकन से उभय सुख होता है।

भावः–

1. विश्वास Trust आधार मूल्य
2. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love पूर्ण मूल्य

क्या ये भाव हमें सहज स्वीकार्य हैं ?

जब हम इन भावों से जी रहे होते हैं, तो क्या हम सुखी होते हैं?

जब हम परस्परता में इन भावों का निर्वाह करते हैं तो क्या दूसरा सुखी होता है?

Trust (विश्वास)

Trust = to be assured (आश्वस्त होना)

= to have the clarity that the other wants to make me happy & prosperous

= दूसरा मेरे सुख, समृद्धि के अर्थ में है, ऐसा स्पष्ट होना

विश्वास का मूल्यांकन

<u>जाँचे अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर</u>

1a. मैं स्वयं को निरंतर सुखी करना चाहता हूँ √

2a. मैं दूसरे को निरंतर सुखी करना चाहता हूँ √

3a. दूसरा स्वयं को निरंतर सुखी करना चाहता है √

4a. दूसरा मुझे निरंतर सुखी करना चाहता है ?

<u>चाहना – सहज स्वीकृति</u>

<u>जैसा होना मुझे सहज स्वीकार है</u>

<u>जाँचे – योग्यता के आधार पर</u>

1b. मैं स्वयं को निरंतर सुखी कर पाता हूँ ?

2b. मैं दूसरे को निरंतर सुखी कर पाता हूँ ?

3b. दूसरा स्वयं को निरंतर सुखी कर पाता है ?

4b. दूसरा मुझे निरंतर सुखी कर पाता है ??

<u>योग्यता</u>

जैसा मैं हूँ (∑ इ., वि., आ.)

दूसरे के बारे में	स्वयं के संदर्भ में
1. दूसरे ने ग्लास तोड़ दिया	मुझसे ग्लास टूट गया
2. दूसरे ने जानबूझकर गलती की	मुझसे अनजाने में गलती हो गयी है।
3. दूसरे ने जानबूझकर गलती की ➡ दूसरा गलत है।	मुझसे हमेशा अनजाने में गलती होती है। मेरा इरादा ऐसा नहीं था ➡ मैं अच्छा आदमी हूँ

हम अपना आकलन (2a) के आधार पर करते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मैं अच्छा आदमी हूँ।

हम दूसरे का आकलन (4b) के आधार पर करते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि दूसरा गलत आदमी है।

हम दूसरे की योग्यता को देखकर उसके चाहने पर शंका करने लगते हैं।

गुस्सा, क्रोध, खीझ, चिढ़ ये सभी चाहने पर शंका की पहचान है।

दूसरे की चाहना (सहज स्वीकृति) पर शंका होना संबंध में समस्या की एक मूलभूत कारण है।

स्वयं में जाँचे

कितने लोगों की चाहना सहज स्वीकृति पर मुझे हमेशा विश्वास बना रहा है– निरंतर, बिना किसी शर्त के

यदि मुझे दूसरे की चाहना पर विश्वास है, लेकिन उसकी योग्यता कम है, तो ऐसी स्थिति में हमें क्या सहज स्वीकार है।

1. उसकी योग्यता विकसित करने में सहयोग करना } **विश्वास**
2. खीझना
3. गुस्सा करना
4. विरोधी के रूप में देखना

} अविश्वास (2–4)

विश्वास संबंध का आधार मूल्य है।

सारांश

दूसरा मेरे सुख, समृद्धि के अर्थ में है, इस बात की आश्वस्ति, विश्वास है। यदि मुझे दूसरे की चाहना पर विश्वास है तो मैं उसे संबंधी के रूप में देखता हूँ। मैं दूसरे के साथ अपनी पूरकता को देख पाता हूँ।

कार्यक्रम हम एक–दूसरे की योग्यता का आकलन करके तय करते हैं।

यदि दूसरे की योग्यता कम है तो

1. मैं स्वयं जिम्मेदारीपूर्वक जीता हूँ
2. मैं दूसरे को समझदार, जिम्मेदार होने में सहयोग करता हूँ।

यदि मेरी योग्यता कम है तो मैं दूसरे से समझने, सीखने को तत्पर होता हूँ।

अविश्वास की स्थिति में

- मैं स्वयं की चाहना और दूसरे की योग्यता के आधार पर आकलन करता हूँ।
- बार–बार हमें दूसरे के प्रति गुस्सा, क्रोध, खीझ, चिढ़ आता है।